शोध पत्र- हिन्दी

Dec.-09—Jan.-2010

हिन्दी कथा साहित्य के परिप्रेक्ष्य में ईसाई धर्म का प्रचार एवं प्रसार

* डॉ. राम स्वरूप

*हिन्दी विभाग, विद्यान्त हिन्दू कॉलेज, लखनऊ

सैद्धान्तिक दृबिटकोण से धर्म को एक ऐसी वैयक्तिक मानसिक और बौद्धिक भावना इंगित किया गया है जो कि विशुद्ध सात्विक है। धर्म के विशुद्ध स्वरूप को स्पबट करते हुए कतिपय विद्वानों ने इस मन्तव्य का प्रतिपादन किया है कि उसका आधार प्रेम भावना है और इस कारण से धर्म या संघ को संगठित होने की आवश्यकता है, किन्तु जहाँ प्रेम ही प्रेम हो और संघ की स्थापना मात्र एक विनोद हो या मात्र प्रभु के संकेत पर कुछ किया गया हो तो वहाँ तो संघ के माध्यम से प्रेम के वितरण की आवश्यकता है। प्रेम को भी जब बॉध दिया जायेगा तो वह मोह हो जायेगा। यदि किसी संत की सन्तानें साथ मिलकर नहीं चलती तो भी सन्त की कृपा ही है।

यवहारतः जीवन का प्रेममय हो जाना ही धर्म का लक्ष्य है। मानव मात्र के प्रति यदि तुम्हारा प्यार न जगा तो तुम्हें अपनी भावना पर ध्यान देना होगा। किसी पथ विशेबा को अपनाकर या किसी गुरू के संरक्षण में रहकर यदि किसी का जीवन प्रेममय है तो इसमें शिबय की भावना ही प्रधान है। गुरू के शरीर भिन्न–भिन्न हैं और धर्मों की पद्धतियाँ भिन्न–भिन्न हो सकती हैं, किन्तु सबका संकेत एक सत्य की ओर है। पद्धति में उलझने वाला सत्य से दूर रह जाता है। किसी पथ–विशेबा को अपनाकर यदि किसी को आत्म–ज्ञान हुआ है और तुम सोचो कि पथ परिवर्तन तुम्हें आत्म–ज्ञान करा देगा तो यह तुम्हारी भूल है क्योंकि तुम जिसके संरक्षण में हो वही तुम्हारी विकलता में तुम्हें प्राप्ति होगी। अधिकांश चिन्तकों ने धर्म को एक ऐसी वैयक्ति भावना इंगित किया है, जो व्यक्ति के अन्तःकरण की शुद्धि करती है। धर्म को व्यापक परिप्रेक्ष्य में विवेचित करते हुए उसे मानव जीवन का अपरिहार्य अंग घोबित किया है। कतिपय विचारकों ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि ईसाई धर्म वस्तुतः ईसाई मत है, क्योंकि धर्म विभाजित नहीं हो सकता और मानव मात्र का एक ही धर्म होता है।

ईसाई धर्म के स्वरूप का हिन्दी कथा साहित्य के परिप्रेक्ष्य में यह भी ज्ञातव्य है कि परतंत्र भारत में ईसाई धर्म के प्रचार और प्रसार के व्यापक स्तरीय प्रयास हुये। ईसाई धर्म में भी साधनों की पवित्रता और साध्य की पवित्रता दोनों को ही आदर्श धर्म में संगत माना गया है। प्रेमचन्द लिखित 'रंगभूमि' नामक उपन्यास में प्रभु सेवक एक कारखाना स्थापित करने के लिये अपने पिता जॉन सेवक द्वारा अपनाये जाने वाले धर्म विरोधी व हथकण्डों का प्रतिरोध करता हुआ कहता है। ''प्रभु सेवक–उस बेबस अंधे की जमीन पर कब्जा करने के लिये आप जिन साधनों का उपयोग कर रहें हैं, क्या वे धर्मसंगत हैं धर्म का अन्त वहीं हो गया, जब उसने कह दिया कि मैं अपनी जमीन किसी तरह न दूँगा। अब कानूनी विधानों से, कूटनीति से, धमकियों से अपना मतलब निकालना आपको धर्मसंगत लगता होगा, पर मुझे वह सर्वथा अधर्म और अन्याय ही प्रतीत होता है। जॉन सेवक–तुम इस वक्त अपने होश में नहीं हो, मैं तुमसे वाद–विवाद नहीं करना चाहता। पहले जाकर शांत हो जाओं, फिर मैं तुम्हें इसका उत्तर दूंगा।''1 धर्म प्रचार की भावना पर भारत में रहने वाले ईसाई पूँजीपतियों और उद्योगपतियों ने विशेष बल दिया। उनका मन्तव्य है कि वह एक प्रकार की भूख और मानसिक आवश्यकता है जिसकी पूर्ति आवश्यक है। प्रभु सेवक ने घर आते ही मकान का जिक्र छेड़ दिया। जॉन सेवक यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुये कि अब इसने कारखाने की ओर ध्यान देना शुरू कर दिया। बोले– हॉं मकानों का बनना बहुत जरूरी है। इंजीनियरों से कहो,

एक नक्शा बनायें। मैं प्रबन्ध कारिणी समिति के सामने इस प्रस्ताव को रखूँगा। कुलियों के लिये अलग–अलग मकाने बनवाने की जरूरत है। लम्बे–लम्बे बैरक बनवा दिये जायें, ताकि एक–एक कमरे में 10.12 मजदूर रह सकें।

''प्रभु सेवक – लेकिन बहुत से कुली ऐसे भी तो होंगे, जो बाल–बच्चों के साथ रहना चाहेंगे।

मिसेज सेवक – कुलियों के बाल–बच्चों को वहॉ जगह दी जायेगी तो एक शहर आबाद हो जायेगा। तुम्हें उनसे काम लेना है कि उन्हें बसाना है, जैसे फौज के सिपाही रहते हैं, उसी तरह कुली भी रहेंगे। हॉ, एक छोटा सा चर्च जरूर होना चाहिये। पादरी के लिये एक मकान भी होना जरूरी है।

ईश्वर सेवक – खुदा तुझे सलामत रखे बेटा, तेरी यह राय मुझे बहुत पसन्द आयी। कुलियों के लिये धार्मिक भोजन, शारीरिक भोजन से कम आवश्यक नहीं। प्रभु मसीह, मुझे अपने दामन में छिपा। कितना सुन्दर प्रस्ताव है। चित्त प्रसन्न हो गया। वह दिन कब आवेगा, जब कुलियों के हृदय मसीह के उपदेशों से तृप्त हो जायेंगे।

जॉन सेवक – लेकिन यह तो विचार कीजिये कि मैं यह साम्प्रदायिक प्रस्ताव समिति के सम्मुख कैसे रख सकूँगा मैं अकेला तो सब कुछ हूँ नहीं। अन्य मेम्बरों ने विरोध किया, तो उन्हें क्या जबाव दूँगा मेरे सिवा समिति में और कोई क्रिश्चियन नहीं हैं। नहीं, मैं इस प्रस्ताव को कदापि समिति के सामने न रखूँगा। आप स्वयं समझ सकते हैं कि इस प्रताव में कितना धार्मिक पक्षपात भरा हुआ है।'' 2

ब्रिटिश परतंत्रता के युग में भारत में ईसाई धर्म के प्रचार–प्रसार का प्रयास केवल ईसाई पादरियों के द्वारा ही नहीं किया जाता था, वरन् सामान्य ईसाइयों, पूँजीपतियों और उद्योगपतियों के द्वारा भी इसमें योगदान दिया जाता था। ''मिसेज सेवक – जब कोई धार्मिक प्रश्न आता है, तो तुम उसमें ख्वाहमख्वाह मीन–मेख निकालने लगते हो। हिन्दू कुली तो तुरन्त किसी वृक्ष के नीचे दो–चार ईंट पत्थर रखकर जल चढ़ाना शुरू कर देंगे, मुसलमान लोग भी खुले मैदान में नमाज पढ़ लेंगे, तो फिर चर्च से किसी को क्या आपत्ति हो सकती है। ईश्वर सेवक – प्रभु मसीह, मुझ पर अपनी दया दृष्टि कर। बाइबिल के उपदेश प्राणि मात्र के लिये शान्तिप्रद हैं। उनके प्रचार में किसी को कोई एतराज नहीं हो सकता और अगर एतराज हो भी तो तुम इस दलील से उसे रद्द कर सकते हो कि राजा का धर्म भी राजा है। आखिरकार सरकार ने धर्म प्रचार का विभाग खोला है, तो कौन एतराज कर सकता है, और करे भी तो कौन उसे सुनता है ध् मैं आज ही इस विबाय को चर्च में पेश करूँगा और अधिकारियों को मजबूर करूँगा कि वे कम्पनी पर अपना दबाव डालें। मगर यह तुम्हारा काम है, मेरा नहीं, तुम्हें खुद इन बातों का ख्याल होना चाहिये। न हुये मि0 क्लार्क इस वक्त।

मिसेज सेवक – वह होते, तो कोई दिक्कत ही नहीं होती।

जॉन सेवक – मेरी समझ में नहीं आता कि इस तजवीज को कैसे पेश करूँगा। अगर कम्पनी कोई मन्दिर या मस्जिद बनवाने का निश्चय करती, तो मैं भी चर्च बनवाने पर जोर देता। लेकिन जब तक और लोग अग्रसर न हों मैं कुछ नहीं कर सकता और न करना उचित ही समझता हूँ।

ईश्वर सेवक – हम औरों के पीछे–पीछे क्यों चले हमारे हाथों में दीपक है, कंधे पर लाठी है, कमर में तलवार है, पैरों में शक्ति है, क्यों आगे न चलें क्यों दूसरों का मुँह देखें 3

आचार्य चतुरसेन शास्त्री लिखित 'शुभदा' नामक उपन्यास में रेवरेण्ड पादरी जॉनसन का चरित्रांकन करते हुये इस तथ्य की ओर संकेत किया है कि भारत में ईसाई पादरियों के सौम्य स्वरूप और शान्तिपूर्ण व्यवहार के कारण ही ईसाई पादरियों के द्वारा धर्म प्रचार हुआ। मकान में रेवरेण्ड पादरी जॉनसन रहते थे। जॉनसन बड़े सज्जन और दयाल पुरूष थे। वे लन्दन की क्रिश्चियन नालेज सोसाइटी की ओर से भारत में ईसाई धर्म का प्रचार करने आये थे और अब उन्हें कलकत्ते में रहते बीस वर्ष हो गये थे। वे एक विद्वान और शान्त प्रकृति के पुरूष थे। कलकत्ते के सभी छोटे बड़े अंग्रेज अफसर और हिन्दुस्तानी लोग भी उनका बहुत आदर करते थे। शुरू–शुरू में बंगाली जन फादर शब्द का शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकते थे। इसलिये उन्होंने इस नाम का भारतीयकरण करके 'पादरी' शब्द बना लिया था और वे सब भारतीय ईसाई फादर जॉनसन को पादरी साहब कहकर पुकारते थे। आगे यह पादरी शब्द सभी ईसाई मिशनरियों के लिये आम हो गया। रेवरेण्ड पादरी जॉनसन को एक समाज सुधारक और आदर्श धर्म प्रचारक पात्र के रूप में चित्रित करते हुये आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने 'शुभदा' नामक उपन्यास में यह संकेत किया है कि भारत में सामाजिक कुरीतियों की जड़े बहुत गहरी हैं, परन्तु फिर भी सामाजिक अभिशाप से ग्रस्त हिन्दू विधवाओं के कल्याण के लिये ईसाई समाज को आगे आना चाहिये। आचार्य चतुरसेन

शास्त्री ने 'सोना और खून' नामक उपन्यास में एक अंग्रेज सेना अधिकारी को मिशनरी के रूप में चित्रित किया है, जो सेना के हिन्दुतानी सिपाहियों को प्रलोभन देकर उनकी पदोन्नति करता है तथा उन्हें साधारण सिपाही से जमादार या हवलदार बना देता है। ''मैं भी एक अफसर हूँ जनरल मेकडानल्ड, परन्तु मैं पहले मिशनरी हूँ, बाद में अफसर। सेना के हिन्दुस्तानी सिपाहियों को ईसाई बनाना मेरा मिशन है और मैं लगातार अट्ठाइस साल से हिन्दुस्तानी सिपाहियों को ईसाई बनाने का काम कर रहा हूँ। हिन्दू या मुसलमान जो भी सिपाही ईसाई बन जाता है, मैं उसे तुरन्त जमादार या हवलदार बना देता हूँ। चाहे वह इस योग्य हो या न हो।''4 ईसाई पादरियों द्वारा धर्म प्रचार की योजनायें जनजीवन के प्रत्येक क्षेत्र में किस प्रकार से हावी थीं और धर्म परिवर्तन की प्रेरणा देते हुये किस प्रकार से धार्मिक विश्वास को प्रभावित किया जा रहा था। इसका परिचय आचार्य चतुरसेन शास्त्री द्वारा लिखित 'सोना और खून' के निम्नलिखित उदाहरण में दृष्टव्य है– ''मिशनरियों का जाल भी तो देखो देश में फैल रहा है। स्कूलों में, अस्पतालों में, बाजारों में, जहाँ देखो ईसाई पादरी अपना काम कर रहे हैं। वे हमारे देवी–देवताओं को गालियाँ देते हैं। उनका मजाक उड़ाते हैं। अजी उनका एक लाट पादरी है, जो लाट साहब के बराबर है। अजी हमारा लड़का सरकारी स्कूल में पढ़ता है। उससे जब मैंने पूछा कि बेटा, स्कूल में तुम क्या पढ़ते हो, तो उसने कहा– क्या तुम्हें पता है कि हमारा ईश्वर कौन है और हमारा उद्धारक कौन है मैंने कहा– भगवान राम हमारे ईश्वर हैं। श्रीकृष्ण हमारे उद्धारक हैं। तो उसने हँसकर कहा – तुम कुछ नहीं जानते बाबा। ईसा मसीह हमारे उद्धारक हैं और ईश्वर हैं। हमारे स्कूल के बड़े मास्टर साहब ने हमें बताया।''5

आचार्य चतुरसेन षास्त्री ने परतंत्र भारत में ईसाई मिशनरियों के द्वारा धर्म प्रचार की योजनाओं का विस्तार से वर्णन करते हुये 'सोना और खून' नामक उपन्यास में लिखा है कि इस समय मिशनरियों के स्कूल कालेज बन गये थे और उनमें धड़ल्ले से बाइबिल हिन्दू , मुसलमानों को पढ़ाई जाती थी। तथा लार्ड कैनिंग की सरकार ने उन्हें बड़ी–बड़ी रकमें सहायतार्थ दी थीं, जबकि देशी पाठशालायें और मकतब तोड़ दिये थे। ईसाई अपने व्याख्यानों में कहते थे कि जो हिन्दू, मुसलमान ईसाई हो जायेगा उसकी जमीन–जायदाद, धन–माल पर उसी का पूरा कब्जा रहेगा। ऐसा कानून बन चुका है। यह सत्य भी था कि उन दिनों मिशनरियों को मोटी–मोटी तनख्वाहें भारतीय खजाने से दी जाती थीं। उन दिनों साधारण गोरे सरकारी कर्मचारी से लेकर बड़े से बड़े अफसर तक की यह चेष्टा रहती थी कि जल्द से जल्द उनके मातहत सब काले आदमी ईसाई बन जायें। उस समय लार्ड कैनिंग और उनके कौंसिलर ही सरकार थे। इन सब कारणों से लोगों में एक अशान्ति थी, अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की भावना घर कर जाती थी और अब इस विचार से, कि यदि कभी भारतीय प्रजा विद्रोह करे तो उसकी आँच सैनिकों तक न पहुँचने पाये, देशी सैनिकों में भी ईसाई धर्म का प्रचार जोरों से होने लगा था। उसके बाद यह पता चला कि इन जोशीले अफसरों में से अनेक न रोजी के ख्याल से फौज में भर्ती हुये थे, न इसलिये भर्ती हुये थे कि फौज का कार्य उनकी प्रकृति के अत्यन्त अनुकूल था, बल्कि उनका केवल मात्र और एकमात्र उद्देश्य था कि इस जरिये से लोगों को ईसाई बनाया जाये। फौज को उन्होंने खास तौर पर इसलिये चुना, क्योंकि शान्ति के दिनों में फौज के अन्दर सिपाहियों और अफसरों दोनों को हर दर्जे की फुर्सत रहती है और वहाँ पर बिना खर्च, परिश्रम इत्यादि के या बिना गाँव–गाँव भटकने के हर तरफ बहुत बड़ी संख्या में गैर ईसाई मिल सकते हैं।''6

बेनी प्रसाद बाजपेयी ने 'सन् 57 के विप्लव' नामक कृति में विगत शताब्दी में ईस्ट इण्डिया कम्पनी एवं उसके उपरान्त ब्रिटिश शासन काल में ईसाई मत के प्रचार–प्रसार एवं धर्म परिवर्तन हेतु किये जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुये इस महत्व के तथ्य को रेखांकित किया है कि इन सबों के ईसाई मत के प्रचार का एक मात्र उद्देश्य अपने साम्राज्य को सुदृढ़ बनाना था। विलियम एडवर्डस विप्लव के दिनों में कम्पनी का नौकर था और वह फिर आगरा हाई कोर्ट का एक जज हुआ। उसकी राय थी कि हम विदेशी आक्रमण करने वाले और विजेता समझे जाते हैं और इसी प्रकार सर्वदा समझे जायेंगे। हमारे लिये अपनी रक्षा का सबसे अच्छा उपाय यह है कि हम देश को ईसाई बना लें। कट्टर कर्मकाण्डी ब्राताणी थी। उसे यह सब पसन्द न था। वह ईसाई होना भी न चाहती थी। पर कहाँ जाती, धूप पानी से पनाह कहाँ पाती जो कुछ उन्होंने कहा, उसने किया। गिरजे में भी गयी। फिर वह, वह सब न कर सकी। उसने उस संस्था के अधिकारी, कर्मचारी के पास जाकर सब साफ–साफ कह दिया। उसने उससे कहा कि उसका ईसाई बनने का इरादा नहीं। वह उस पर तरह–तरह

के दबाव डाल सकता था, सता सकता था, तंग कर सकता था, ईसाई होने के लिये बाधित कर सकता था। लक्ष्मी में इतनी शक्ति न थी कि वह अपने विष्वासों पर दृढ़तापूर्वक खड़ी रह सके।''7

'घरौंदा' नामक उपन्यास में डॉ0 रांगेय राघव ने यह संकेत किया है कि ईसाइयों ने भारत में दलितों का धर्म परिवर्तन करके उन्हें ईसाई बनाने के लिये जो प्रयास किये। उनके मूल में वे सिद्धान्त थे। जो वास्तविक धर्म का मूल आधार है। इसलिये उन्हें अपने प्रयासों में सफलता भी मिली। उक्त उपन्यास के निम्नलिखित अंश से इसी तथ्य की परिपुष्टि होती है – ''हम लोग ईसा के अनुयायी हैं, जो अहिंसा का पुजारी था। लेकिन आज वे उपदेष केवल रूढ़ि बन गये हैं और उनके पीछे हम ऑख बन्द करके भटक रहे हैं। इस मशीनी युग ने हमें कल की बहुत सी बातों से मुक्त कर दिया है। माध्यम एक ऐसी वस्तु है जो सर्वसाधारण के लिये एक हो। धर्म भी एक माध्यम है। यदि धर्म का अर्थ विश्व समाज सेवा है, सत्य की खोज है, तो किसी भी धर्म की बुनियाद एक ही है, क्योंकि आज सभी की प्रेरणा एक है, स्वरूप भिन्न–भिन्न और कार्य सब उल्टे। प्रस्ताव तो आपने सुन ही लिया है। सांस्कृतिक ऐक्य की बुनियाद डालने का अपना अधिकार आपको याद रखना पड़ेगा। धन्यवाद !''8 ईसाई धर्म प्रचार के माध्यम से भारत में अपने व्यापक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये ईसाइयों ने बाइबिल का आश्रय लिया और ईसा मसीह के उपदेशों को जन–जन तक पहुॅचाने का कार्य किया। बलभद्र ठाकुर लिखित 'घने और बने' जैसे उपन्यास में इसी तथ्य की व्यंजना है। अपने अतृप्त हृदय को शान्त करने के उद्देश्य से उसने 'बाइबिल' की शरण गही। अपनी स्मृति के सहारे उसने ईसा के उन वाक्यों का बार–बार अध्ययन और मनन शुरू किया जिनमें उसे अपने भावी जीवन के लिये शुभ संदेश और परम् पथ का प्रकाश दिखायी दे रहा था। ईसा मसीह के ये वाक्य उसके छदय में बारम्बार ध्वनित होने लगे– ''धन्य हैं वे जो मन आकांक्षा के गरीब हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जो शोक करते हैं क्योंकि उन्हें शान्ति प्राप्त होगी। धन्य हैं वे जो विनम्र हैं क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। धन्य हैं वे जो दयावान हैं क्योंकि वे दया प्राप्त करेंगे। धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं क्योंकि वे परमेष्वर के पुत्र कहलायेंगे।''9 यशपाल ने 'तेरी मेरी उसकी बात' नामक उपन्यास में ईसाई धर्म के प्रचार–प्रसार की कृत संकल्पता एक पात्र के निम्नलिखित विचारों के माध्यम से दर्शायी है– ''देवदत्त दुविधा में था, उसका निश्चय था, अपना जीवन ईश्वर पुत्र ईसू का धर्म संदेश पृथ्वी पर फैलाने के निमित्त अर्पण करेगा। संतों और भगवान ईसू की तरह नारी संगति के पाप से मुक्त रहने की इच्छा। मन में यह भी सोच। मुझसे विवाहिता मेरी पत्नी बना दी गयी। लड़की का क्या होगा हिन्दू कुसंस्कारों के कारण ब्राह्मण की अछूती लड़की का भी दूसरा विवाह नहीं हो सकेगा। उस लड़की का क्या होगा वह मेरे कारण विधवा का जीवन बितायेगी। हिन्दू विधवाओं की दुरावस्था जानता था। लड़की के दुर्भाग्य की कल्पना से दिल दहल जाता।.. उस बेचारी का कसूर लड़की को उसकी पत्नी बना दिया गया था। विवाह क्यों किया परन्तु उससे पूछा किसने था, न उससे, न लड़की से। उस लड़की या पत्नी के प्रति इस दया के अतिरिक्त देवदत्त को क्या आकर्षण होता परिचय ही न था।''10 इस रूप में यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि परतंत्र भारत में ईसाई धर्म के प्रचार और प्रसार के व्यापक स्तरीय प्रयास हुये थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.''रंगभूमि'' भाग. 1, मुंशी प्रेमचन्द, पृष्ठ . 101 2. ''रंगभूमि'' भाग .2, मुंशी प्रेमचन्द, पृष्ठ . 149 3 ''रंगभूमि'' भाग . 2, मुंशी प्रेमचन्द, पृष्ठ. 150 4. ''सोना और खून'' भाग . 3, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, पृष्ठ. 168 5. ''सोना और खून'' भाग . 3, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, पृष्ठ. 250 6 . ''सन् 57 के विप्लव'', श्री बेनी प्रसाद, पृष्ठ. 52 7. ''पतित पावनी'', आरिगपूड़ि, पृष्ठ . 27 8. ''घरौंदा'', डॉ0 रांगेय राघव, पृष्ठ . 304 9. ''घने और बने'', श्री बलभद्र ठाकुर, पृष्ठ . 138 10. ''मेरी तेरी उसकी बात'', श्री यषपाल, पृष्ठ . 137